

श्री गौतम स्वामीने नमः । आत्मनिन्दन स्वामीने नमः ।
प. पू. जोगलसंज्ञ सुवि. गुरुभयो नमः

Date: / /

Page No.

निम्नादिता - इतिदर्शना आजी, पू. उम्भिरसा श्रीडी म.सा.

नाम-

- 1, नय को प्रकार _____ है । [5, 6, 7]
- 2, _____ जो है उसको पदसङ्घ में से शान की गंगा
नामकली है । [उपाध्याय, आचार्य, अरिहंत]
- 3, _____ है भावमंगल है ।
[तप, शान, अर्था]
- 4, दर्शनपरामिता ग्रंथ में पादा है की पदों
बाद में दिया । [दर्शन, शान, याज्ञिक]
- 5, _____ ल. फर्म को खोजनेवाला है ।
[दर्शन, याज्ञिक, तप]
- 6, _____ फर्म को नष्ट करनेवाला है ।
[याज्ञिक, तप, दर्शन]
- 7, तीर्थंकर को _____ फर्म को उदय होने को कारण देना
देते हैं । [शानापरणय, तीर्थंकर नाम, अंतराय]
- 8, प्रथम 8 पद को गुण _____ होते हैं ।
[208, 296, 346]
- 9, उपाध्याय पद को गुण से _____ पद को गुण डबल
होते हैं । [शान, याज्ञिक, तप]
- 10, नपपद की आबाधना में _____ तैल्यंदन करने की
विधि है । [1, 3, 9]
- 11, नपपद की आत्मा _____ महीने से शत्रु करने की
होती है । [आसौ, माह, यंत्र]
- 12, विजयसिंहसूरीजी म.सा की _____ चेड़ी में पू.
पदविजयजी म.सा हुआ है । [5, 6, 7]
- 13, _____ से समनारुपी सुख की प्राप्ति होती है ।
[दर्शन, याज्ञिक, तप]
- 14, _____ से निपाठियन फर्म का नाश होता है ।
[दर्शन, याज्ञिक, तप]



- 15, तप को — की उपमा दी गई है। [ललापार, भाका]
- 16, मोड़ आत्मका — है। [स्वभाव, प्रभाव, परभाव]
- 17, सिद्धिवा — प्राप्त होती है। [ज्ञान, तप, यारिभ]
- 18, संयम को स्थान — है। [असंख्यता, 17, 70]
- 19, वीर ~~प्रभु~~ प्रभुने — को तप की प्रशंसा की है।
[सुलसा, दन्ना अणवार, स्थुलिभु]
- 20, दोषों से रहित निहारभूमि होती है।
[23, 23000, 1023]
- 21, लो लथकार समान पाया है।
[आचार्य, उपाध्याय, साधु]
- 22, आचार्य को 36 गुण — से युक्त माना जाता है।
[4, 5, 6]
- 23, उपाध्याय भगवंत मिथ्यावादी रुची को नारा
पारने में सिद्ध समान है। [सर्प, डाया, विरज]
- 24, गीर्वाण को पड़ने पारने में आचार्य — समान है।
[प्रहसभ, डाया, घोडा]
- 25, दूरी समाचारी में — नंबर की समाचारी लथाकार है।
[5, 9, 7]
- 26, साधु — की तरह रोजी सधसे डिपर ही होते हैं।
[बांदी, सोना, रत्नो]
- 27, — से नरप और स्वर्ग दिखता है।
[ज्ञान, दर्शन, तप]
- 28, समझन को लक्षण — होते हैं। [67, 5, 3]
- 29, साधु अगंधन — की तरह यूका हुआ यारते नही।
[सर्प, स्थान, चाडीवा]
- 30, समझन की शुद्धि — प्रकार की है। [67, 3, 5]
- 31, — अर्द्धा को विधर पारता है।
[ज्ञान, यारिभ, तप]

- 32, अभयि आत्माको _____ पूर्व का शान हो सकता है।
[1, 5, 9]
- 33, शास्त्र में _____ प्रकारके प्रभावक हैं। [साक्षात्कार है।]
[8, 10, 12]
- 34, साधु _____ फीटिके शुद्ध आहार लेते हैं।
[5, 9, 42]
- 35, अर्ज्यंतर परिग्रह _____ प्रकार के होते हैं।
[1, 9, 14]
- 36, यकित्त का दूसरा नाम _____ है।
[सामयिक, पोषक, यज्ञ]
- 37, _____ ग्रंथमें नक्षत्र की पूजा दी गई है।
[कल्पसूत्र, प्रसिद्धाकल्प, आचार्य]
- 38, अरिहंत की पुजाकी _____ भेद हैं। [10, 12, 21]
- 39, श्रेष्ठ (उत्तम) आचार्य _____ गुणसे सुशोभित है।
[1008, 108, 1296]
- 40, मात्रापर प्रपयन माला को पहचानने को भी शाना कहलाते हैं। (सम्पत्ति, साधु, आपण)
- 41, उपाध्याय को _____ उपाधि दी गई है।
(राजा, युपराज, भंती)
- 42, अरिहंत के अष्ट प्रतिहार्य [_____ गुण हैं।
(साधु, अर्ज्यंतर]
- 43, _____ कर्म को शय हो जाने को साद प्रभु दिक्षा लेते हैं।
(नाम, वेदनाय, भोगापला]
- 44, चूरे 3260 को संभ्र संमान _____ है।
[आचार्य, उपाध्याय, साधु]
- 45, _____ बिना जीव संसारमें इधर उधर भटकते हैं।
[दर्शन, शान, याकित]
- 46, उपांग की संख्या _____ है। [11, 12, 6]

- 47, _____ कार्य को संयुक्त अर्थसे अल्पावधि सुख की प्राप्ति होती है। [वेदनाय, अंतराय, नाभ]
- 48, नपयदमे _____ यदो तत्पत्रयी भवते है। [3, 6, 9]
- 49, अप्रपत्नी _____ की तरह दो रथों को दोस्कार दीक्षाकरोते है। [दुक्त, मीठी, तजखला]
- 50, साधु-साध्या जी 18 _____ शीलांगों को धारण करनेवाले होते है। [सो, लाख, दुस्कार]
- 51, नपयद की ओला _____ अत्रमे होती है। [5, 10, 15]
- 52, उपशम सम्पान _____ बार या शपते है। [5, 0, 2]
- 53, नपयदमे _____ यद धर्म है। [4, 5, 9]
- 54, नपयद की अधिष्ठायण देव का नाम _____ है। [मालाभद्र, अत्रपाल, विमलेश्वर]
- 55, _____ यद का सबसे लडा अहेमान है। [अरिहंत, सिद्ध, आचार्य]
- 56, फोन से यद का पर्ण श्याम है की जीसके गुण _____ है। [25, 27, 36]
- 57, पाठक यद को _____ यद से भी पडेयाना जीना है। [भुनि, पायक, सुशी]
- 58, नपयद को आठमे यद की आराधनामे _____ माला पत्रना है। [17, 70, 20]
- 59, नपयद को रत्नपत्री से युक्त गुण _____ है। [188, 108, 238]
- 60, _____ कार्य को संयुक्त अर्थ करने से अरपीपला प्राप्त होता है। [नाम, गोत्र, अंतराय]